नवम् राष्ट्रीय जीवन विद्या सम्मेलन

दिव्य पथ संस्थान, अमरकण्टक, जिला- शहडोल (म.प्र.)

१०, ११ एवं १२ अक्टूबर २००३

आमन्त्रण

हर्ष का विषय है कि सार्वभौम मानवीय संस्कृति का निरूपण करने वाले स्रोत 'जीवन विद्या' का नवम् राष्ट्रीय सम्मेलन नर्मदा उद्गम तीर्थ अमरकण्टक में दिनांक १०, ११ एवं १२ अक्टूबर २००३ को होना निश्चित हुआ है।

समाधान, समृद्धि, अभय एवं सह–अस्तित्व से मानवीय संस्कृति का उदय है एवं यही इसकी पराकाष्ठा भी है। इस संस्कृति की स्थापना के लिए मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) सरलतम मार्ग है। **परम पूज्य श्री अग्राहर नागराज जी के तप एवं चिन्तन पर प्रकृति का प्रसाद रूप "मध्यस्थ दर्शन" पुण्यभूमि अमरकण्टक में मिला।** इसकी अवधारणा को राष्ट्रीय सम्मेलन के माध्यम से, इस धरती पर अवतरित करने की दिशा में एक प्रयास है। देश–विदेश के विभिन्न स्थानों पर अनेक साथी समाधान, समृद्धि, अभय एवं सह–अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए अपने–अपने स्तर पर प्रयासरत् हैं। इस अभियान को विशाल रूप देने एवं इस दिशा में कार्यरत सभी साथियों के बीच वैचारिक एकरूपता और परस्पर विश्वास को सफल बनाने के लिए प्रतिवर्ष राष्ट्रीय जीवन विद्या सम्मेलन का आयोजन किया जाता है।

सम्मेलन में विचारणीय बिन्दु :–

१. मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में 'जागृति' का स्वरूप
२. जीवन विद्या शिविरों की रूपरेखा
३. जीवन विद्या केन्द्रों का स्वावलंबन
४. 'परिवार मानव' पत्रिका का प्रकाशन
५. जीवन विद्या प्रकाशन का स्वरूप
६. अभियान की भावी दिशा एवं कार्ययोजना – राष्ट्रीय कार्यसमिति का गठन।

सार्वभौम शुभ को धरती पर अवतरित करने के लिए कार्ययोजना एवं क्रियान्वयन की गहन चर्चा हेतु आपकी भागीदारी अपेक्षित है। इस उत्सव बेला में आप सादर आमंत्रित हैं।

विनीत :

शारदा शर्मा **जितेन्द्र तिवारी** **साधन भट्टाचार्य**

- सभी अतिथियों से निवेदन है कि ९ अक्टूर की सायंकाल तक अमरकंटक पहुँच जाएँ।
- अपने आने की सूचना पत्र/दूरभाष द्वारा २ अक्टूबर तक अवश्य दें।
- मार्ग – कटनी, शहडोल, अनूपपुर–पैड्रारोड़–बिलासपुर रेलवे मार्ग पर पैड्रारोड़ उतरकर अमरकंटक पहुँचे। पूर्व सूचना पर पैड्रारोड से अमरकंटक हेतु गाड़ी की व्यवस्था करने का प्रयास रहेगा।